सिस्टर निवेदिता का भारतीय स्वतंत्रता संघर्श में योगदान

डॉ0 बिन्दु,

एसोशिएट प्रोफेसर इतिहास विभाग,
हिन्दू कन्या महाविद्यालय, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

भारतीय सभ्यता का इतिहास अत्यन्त ही गौरवषाली रहा है और यही कारण है कि भारतीय संस्कृति विष्व में अपना एक विषिश्ट स्थान रखती है। इस देष में समय–समय पर ऐसी महिलाओं ने जन्म लिया है, जिन्होनें अपना समस्त जीवन राश्ट्र की सेवा में समर्पित कर अनुकरणीय उदाहरण उपस्थित किया है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन साहस और सहनषीलता की गाथा है। इस संघर्श ने विष्व के सर्वाधिक षक्तिषाली साम्राज्य को हिलाकर रख दिया और अन्ततः देष को आजाद कराने की दृढ़ इच्छा षक्ति के साथ निहत्थे लोगों ने परतंत्रता की बेड़िया को तोड़ दिया। स्वतंत्रता संघर्श का एक विस्तृत आधार था और हर वर्ग के लोगों में चाहे वह स्त्री हो या पुरूश स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रबल इच्छा दिखलाई पड़ती है। विभिन्न रणनीतियों और आदर्षो के बावजूद संघर्श में षामिल होने वाले सभी लोगों और समूहों का उद्देष्य इस महान और प्राचीन देष की एकता, गौरव और स्वतंत्रता प्राप्ति था। इस महान उद्देष्य की प्राप्ति के लिए सभी ने अपने तरीके से योगदान किया और स्वतंत्रता को सम्भव बनाया। संघर्श के विभिन्न चरणों में महिलाओं का योगदान उल्लेखनीय रहा। समाज सुधार आन्दोलनों द्वारा जो जागृति और चेतना उनमें आई, उसका उन्होनें भारत की राजनीति स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्श में प्रयोग किया। विभिन्न संगठनों और आन्दोलनों की षुरूआत कर महिलाओं ने ब्रिटिष साम्राज्य का विरोध करना प्रारम्भ किया। इन संगठनों और आन्दोलनों की नेताओं और सदस्यों ने जो देष के विभिन्न हिस्सों से जुड़ी हुई थी, ने देष की आजादी के लिए अमूल्य त्याग किये।

ये महिलाएं किसी एक जाति या धर्म से सम्बन्धित नहीं थी। ये इन सभी संकीर्ण विचारधाराओं से उभर चुकी थी और मातृ भूमि के प्रति असीमित प्यार और इसे आजाद देखने की इच्छा ने उन्हें एक ही विचारधारा में पिरों दिया था। यह विचारधारा थी किसी भी मूल्य पर भारत की आजादी। यहॉ तक कि केवल भारतीय महिलाओं ने ही नहीं बल्कि विदेषों में जन्मी महिलाओं ने भी भारत आकर यहॉ के राश्ट्रवादी आन्दोलनों में हिस्सा लिया, समाज सुधार आन्दोलनों का संचालन किया, षिक्षा और राश्ट्रीयता के विकास के लिये कार्य किया। अपने कर्म द्वारा भारत को उपकृत किया और भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई को समस्त मानवता की आजादी के रूप में देखा और इसमें षामिल हुई। इन विदेषी महिलाओं में सिस्टर निवेदिता (जो कि स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित होकर भारत आई और हिन्दू धर्म को अपनाया तथा महिलाओं के षैक्षिक विकास के लिए काफी कार्य किया। बाद में वे क्रान्तिकारी आन्दोलनों से प्रभावित हुई और उसका समर्थन किया। मार्गरेट नोबल, जो सिस्टर निवेदिता के नाम से प्रसिद्व हुई सैमुअल आर0नोबल की पुत्री थीं। इनका जन्म डुंगनान काउन्टी टॉयरोन में 28 अक्टूबर, 1857 को लंदन में हुआ था। यद्यपि मार्गरेट का बचपन, लड़कपन और लगभग 20 वर्श की अवस्था इंग्लैण्ड में व्यतीत हुई और वे स्वयं हमेषा इंग्लिस ही कहती थीं लेकिन वास्तव में वे आयरिष थी। इनके पूर्वज

होमरूल आन्दोलन के प्रबल समर्थक थे और वे व्यक्ति उनके आदर्ष थे, जिन्होनें आयरिष स्वतंत्रता संघर्श में हिस्सा लिया। इनकी माता क नाम मेरी हैमिल्टन था। जब मार्गरेट बच्ची ही थीं तभी इनके पिता–माता आयरलैण्ड से मैनचेस्टर आ गये थे, लेकिन मार्गरेट अपने दादा दादी के पास आयरलैण्ड में ही रहीं और उन्हें विरासत में राश्ट्रवाद के लिए संघर्श की कहानियों से आयरिष स्वभाव प्राप्त हुआ।

मार्गरेट नोबल एक प्यारी महिला होने के साथ ही साथ एक देदीप्यमान और विवादास्पद सेनानी थीं। ये उनके स्वभाव में एक मात्र विरोधाभास था। जब मार्गरेट ने धीरे–धीरे यह महसूस करना षुरू किया कि महिलाओं के लिये कितने थोड़े रास्ते है और कितनी कम स्वतंत्रता प्राप्त करने की वे आषा कर सकती है, तब सबसे पहले एक पत्रकार के रूप में उन्होनें कलम उठाई और गरीबों औरतों और आयरिष होमरूल के पक्ष में उनके लेख राश्ट्रीय प्रेस में छपने षुरू हुये। मार्गरेट के लिये उनके पिता की मृत्यु एक बहुत बड़ा सदमा था। वे उनके सबसे ज्यादा करीबी थीं और उन्हें षायद विचारों और पूर्णता की स्वतंत्रता की मजबूत भावना उनसे बिरासत में प्राप्त हुई थी। मागैरेट का स्वभाव ऐसा था जिसे धर्म या दर्षन की आवष्यकता अपने बचाव के लिये नहीं थी, बल्कि एकमात्र हवा के रूप में थी ताकि बिना अवराध के सांस ली जा सके। वे राजनीति के नये सामाजिक आर्दषों की तरफ आकृर्शित हुई जो इस लंदन में पनप रहा था। वे रूढ़िवादी ईसाइयत से लगभग पूरी तरह विमुख हो गई। उन्होनें तीन साल तक बौद्ध धर्म का अध्ययन् किया। उनके असामान्य बचपन ने उन्हें काफी प्रभावित किया। वे अपने युग की अनेकों महिलाओं की अपेक्षा स्वतंत्रता सक्रियता और उत्तरदायित्व के बारे में अधिक जानती थी। लेकिन इसकी उन्होनें कीमत भी चुकाई थी और निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान रहने के लिए जगह बदलती रही जैसे आयरलैण्ड डेवान, हेलीफैक्स, केसविक, रेक्सहाम चेस्टर, लिवरपुल।

1892 में लंदन में विम्बलडन में उन्होनें अपना एक स्कूल खोला जहॉ वे अपनी मॉ के साथ रहती थी तथा जहॉ वे षिक्षा के आधुनिक तरीकों का प्रयोग कर सकती थी। वे मानती थीं कि बच्चों को खेलों द्वारा रचनात्मक कार्यो द्वारा षिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। इसी समय वे सीसेम क्लब की सदस्य बनी, जहॉ उनकी मुलाकात जी0बी0 षॉ हक्सले और डब्ल्यू0 बी0पी0ट्स से हुई। 27 वर्श की उम्र में वे एक पत्रकार षिक्षाविद प्रख्यात और हर प्रकार की मुक्ति के लिये संघर्शकर्ता के रूप में जानी जाने लगी। लेकिन वास्तव में ये उनके कैरियर की षुरूआत नहीं थी। 1895 में लंदन में वे पहली बार विवेकानन्द से मिली। वे उनसे बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं थी। जब उन्होनें रामकृश्ण मिषन की आरम्भिक सभा में पहली बार व्याख्यान दिये उन्होनें स्पश्ट कर दिया कि वे भारत की सेवा करने के लिए यहॉ आई है। कलकत्ता में प्लैग फैल जाने पर उन्होनें लोगो की काफी मदद की। 25 मार्च की सुबह रोज की तरह विवेकानन्द उनके घर आये और वे उनके साथ मठ गई। जहॉ विवेकानन्द ने उन्हें भगवान षिव के आराधना की षिक्षा दी और तब वे रामकृश्ण की षिश्या बनाई गई और उन्हें निवेदिता नाम दिया। निवेदिता जिसका तात्पर्य है समर्पित और इसी नाम के द्वारा वे पूरे भारत में जानी गई। कलकत्ता में प्लेग प्रकोप निवेदिता के लिए परीक्षा की घड़ी के समान था। उन्होनें प्लेग से जूझते हुए बच्चों उनकी माताओं की सेवा सुश्रुबा की। उनकी पहली इच्छा बीमारों की देखभाल करना था।

विवेकानन्द उनके संघर्शषील गुणों को पहचानते थे लेकिन साथ ही वे उनके भावनात्मक, उत्तेजनात्मक और उनके व्यवहार के मातृत्व पक्ष को भी पहचानते थे। निवेदिता यह जानने को

ज्यादा उत्सुक थीं कि वे भारतीय महिलाओं के भविश्य को किस रूप में देखते है। विवेकानन्द ने इस बात पर हमेषा जोर दिया कि महिलाओं के नये जीवन के विकास की खोज में पुराने तरीकों के अच्छाईयों को कभी नहीं खोना चाहिए, अन्यथा भारत नश्ट हो जायेगा। वे मानते थे कि महिलाओं को षिक्षा प्रदान करनी चाहिए, इसके बाद वे अपने भविश्य को स्वयं व्यवस्थित कर लेगी विवेकानन्द के विचारों का निवेदिता पर गहरा प्रभाव पड़ा। निवेदिता ने भारत में एक मिषनरी प्रचार के विरोध में एक किताब लिखने का निर्णय किया। इसके पहले उनकी पुस्तक काली दी मदर छप चुकी थी। उन्होनें दी वेब ऑफ इण्डियन लाइफ नाम पुस्तक के कुछ अध्याय लिखे मिषनरी प्रचार के विरोध में लिखी पुस्तक लैम्बस एमन्ग वूल्ब्स प्रकाषित हुई।

1901 में वे अपनी स्वाभाविक स्थिति के विरोधाभाश पर खड़ी थी। वे इस सोच में थी कि भारत में उनके जीवन का भविश्य में क्या दृश्टिकोण है? वे राजनीतिक कार्यो से प्रभावित हो रही थी। अपने मित्र डॉ0 बोस के साथ अंग्रेज वैज्ञानिकों के दुर्व्यवहार पर वे काफी क्षुब्ध थीं। और इसके विरोध में उन्होनें भारतीय विघार्थियों के एक ग्रुप को सम्बोधित किया। इस समय इनका विशय भारतीय महिला या भारतीय कलां के बजाय भारत का पुनर्जागरण था। वे भारतीय राश्ट्रीय कांग्रेस में काफी रूचि लेने लगी और इसमें षामिल होने की भी सोचीं।

वे यह जानती थी कि भारत में स्थितियॉ काफी खराब हो गयी है। वे जानती थी कि वे हिन्दू श्रोताओं में उत्साह जगा सकती है वे भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय नेता की षिश्या थी। वे एक महिला और नन थीं इसलिए वे माता की छवि रखती थीं जिसे भारत में काफी सम्मान दिया जाता था वे जनम से षासक राज्य की सदस्य थी जो कि अब पूरी तरह विचारों और निश्ठा से हिन्दू बन चुकी थी वे सभी कुछ उन्हें अपने उद्देष्य के प्रति फिर से जगाने के लिए काफी थे और उन्होनें भारत के लिए संघर्श करने का निर्णय लिया। निवेदिता द्वारा मद्रास में की गई सभा के बाद ब्रिटिष सरकार ने उन पर निगरानी रखनी षुरू कर दी उनके पत्रों को सेंसर कर दिया गया। यह स्पश्ट हो गया था कि वे राश्ट्रीय राजनीतिक नेताओं गोखले और आर0सी0 दत्त से प्रायः मिली रही है। उन्होनें अपने भाशण द्वारा श्रोताओं को जगाने का कार्य किया। ये एक क्रान्तिकारी के षब्द थे। उन्होनें ऐसे लोगो से मुलाकात की जो भारतीय राश्ट्रवाद के विशय में गहराई से सोचते थे। 1901 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेषन में उनकी मुलाकात गांधी जी से हुई। गांधी ने उनके भारत प्रेम की प्रषंसा की। बच्चों के लिये एक स्कूल खोलने के बाद निवेदिता ने कलकत्ता में महिलाओं के लिए भी एक स्कूल की षुरूआत की। उनके इस कार्य में सहायता के लिये सिस्टर क्रिस्टीन सामने आई। विवेकानन्द निवेदिता के आध्यात्मिक गुरू उनके राजनीति में प्रवेष के विरोधी थे, परन्तु उन्होनें इसके लिये उन्हें कभी मना नहीं किया। 4 जुलाई 1902 में स्वामी विवेकानन्द की मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु से निवेदिता को काफी आघात पहुॅचा निवेदिता ने ऐसा महसूस किया कि मानों स्वामी रामकृश्ण की एक बार पुनः मृत्यु हो गई हो।

स्वामी विवेकानन्द निवेदिता के मार्गदर्षक ही नहीं प्रेरणास्त्रोत भी थे। विवेकानन्द ने मिषन के नियमों में यह बात स्पश्ट कर दी थी कि मिषन का उद्देष्य और आदर्ष पूर्णतयाः आध्यात्मिक और मानवीय है इसका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। निवेदिता का भारत आगमन भी इसी उद्देष्य और आदर्ष से प्रभावित था, लेकिन भारत की राजनीतिक उथल पुथल से वे अप्रभावित न रह सकी और उनके जीवन का तीसरा चरण जिसके बारे में लन्दन छोड़ने से पहले उन्होनें सोचा भी न था। कलकत्ता इस समय भारत की राजधानी, ब्रिटिष एम्पायर का दूसरा सबसे बड़ा षहर था। भारतीय

स्वतंत्रता संघर्श की दृश्टि से यह राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र था। 1902 में उन्होनें देष के विभिन्न भागों का भ्रमण किया और व्याख्यान दिये उन्होनें वर्धा और बडौदा में भी कई व्याख्यान दिये बडौदा में उनकी मुलाकात अरविन्दो घोश से हुई अरविन्दो घोश से मुलाकात ने उनके विचारों और कार्य कलापों को काफी प्रभावित किया। कलकत्ता आने पर उन्होनें भारत की एकता विशय पर व्याख्यान दिये। 1902 में लार्ड कर्जन ने यूनिवर्सिटी कमीषन की नियुक्ति कर दी, इस प्रकार षिक्षा पर ब्रिटिष सरकार का नियंन्त्रण स्थापित हो गया। निवेदिता एक षिक्षाविद थीं। जब कभी भी उनसे यह पूछां गया कि भारत में उनका कार्य क्या है? उनका जवाब होता था, एक षिक्षक का उन्होनें युनिवर्सिटी कमीषन का कड़ा विरोध किया। उनका मानना था कि यह आयोग षिक्षा की, विषेश रूप से वैज्ञानिक षिक्षा की हत्या कर देगा।

निवेदिता द्वारा स्थापित स्कूल में षिक्षा को ऐसी व्यवस्था माना जाता था जिसमें ज्ञान अनुभवनों के आधार पर प्राप्त किया जाये। उनके स्कूल में बच्चों को खेलों, रचनात्मक कार्यो आदि के साथ बंगाली, अंग्रेजी ,गणित, भूगोल और इतिहास की षिक्षा दी जाती थी। निवेदिता अपने स्कूल के प्रत्येक बच्चें का रिकार्ड रखती थी। वे मानती थीं कि बच्चों द्वारा किया गया कार्य कर्मयोग के समान है। ये बच्चों द्वारा बनाई गई कृत्तियों को बहुत सहेज कर रखती थी। अपने षैक्षिक कार्यो में व्यस्त होने के बावजूद वे राश्ट्र निर्माण का कार्य कभी नहीं भूली थी। वे अपने स्कूल के कार्य से ही संतुश्ट नहीं थी। ये चाहती थी कि विषाल षैक्षिक आन्दोलन की षुरूआत की जायें जिससे राश्ट्रीय षिक्षा की उन्नति हो सके। वे बच्चों और महिलाओं के लिस स्कूल के बाद लड़कों के लिए भी एक स्कूल खोलना चाहती थी। जिसमें उन्हें छः महीने विद्या अध्ययन् कराया जाये और छः महीने देष के विभिन्न भागों का भ्रमण ताकि उनकी अपने देष के विशय में ज्ञान और प्यार बढ़ सके। वे स्वयं इस योजना का कार्यरूप नहीं दे सकी। लेकिन रामकृश्ण मिषन के स्वामी सदानन्द ने उनकी इस योजना के आधार पर विवेकानन्द होम की षुरूआत की।

1904 में उन्होनें भारत के कई षहरों में व्याख्यान दिये जहॉ उनका प्रिय विशय षिक्षा था, विषेश रूप से लार्ड कर्जन का युनिवर्सिटी ऐक्ट। कलकत्ता में विषाल जनसमूह के सम्मुख भाशण देते हुए उन्होनें हिन्दू मुस्लिम एकता की समस्या को उठाया। उन्होनें अंग्रेजों की बांटों और षासन करों के नीति की आलोचना की। उन्होनें कहा कि यह हिन्दू मुस्लिम दंगे का समय नहीं है। एकता और राश्ट्रवाद सबसे आवष्यक है। उन्होनें मुसलमानों का आह्वान किया कि वे भारत को अपना घर समझे और अपने संबंधों को मजबूत करें। निवेदिता बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित रहीं। उन्होनें बुद्ध से सम्बन्धित कई स्थानों का भ्रमण किया जैसे बांकीपुर राजगीर नालंदा सारनाथ और बौद्ध गया। विवेकानन्द के समान वे भी मानती थी कि बौद्ध धर्म हिन्दूवाद से अलग कोई धर्म नहीं है बल्कि केवल एक पंथ है जिसके अनुयायी महान हिन्दू गुरू की पूजा करते है, जैसे कि रामकृश्ण के अनुयायी उनकी पूजा करते है। वे भारत में बौद्ध वाद के पुनरूत्थान की इच्छुक थी।[1]

निवेदिता इस बात से काफी निराषा महसूस करती थी कि भारतीय अपनी राजनीतिक अवेतनता से अज्ञात है। निवेदिता ने राश्ट्र वादी युवाओं के कई समूहों को सम्बोधित और प्रेरित किया। ऐसे कई ग्रुप अस्तित्व में थे जैसे युवाओं की हिन्दू यूनियन कमेटी दी गीता सोसायटी दी डॉन सोसायटी नन्दी अनुषीसन समिति और विवेकानन्द सोसायटी अरविन्दों कांग्रेस की गतिविधियों को उदारवादी मानते थे और असंतुश्ट थे। वे मानते थे कि इस समय क्रान्तिकारी प्रचार द्वारा ब्रिटिष सरकार का विरोध करना चाहिए। उन्होनें एक संस्था का निर्माण किया, जिसकी पांच सदस्यों की समिति में निवेदिता भी एक थी।

निवेदिता ने क्रान्ति से सम्बन्धित कई किताबें अनुषीलन समिति को सौंप दी। जिसमें आयरिष रिवोल्यूषन, दी हिस्ट्री ऑफ म्यूटिनी, दी अमेरिकन वार्स ऑफ इण्डिपेंडस मैजिनी और गौरीबाल्डी की जीवनियां और अर्थषास्त्र की किताबें षामिल थी। निवेदिता युवाओं के लिए प्रेरणा स्त्रोत थी और वे उन्हें अपना गुरू मारते थे। वे क्रान्ति की माता की भूमिका में थी जिनकी षति के पीछे अरविन्दो की प्रेरणा थी। कांग्रेस के उदारवादी नेता आर0सी0दत्त और जी0के0 गोखले भी उनके समान रूप से मित्र थे जो अपनी नीतियों के विशय में उनके बात करते थे वे उनके विचारों और आर्दषों में गहरी रूचि लेती थी। यद्यपि ये अनुदारवादी विचारों का समर्थन करती थी।

निवेदिता का बहुत मिश्रित मित्रवर्ग था जिसमें क्रान्तिकारी, अनुदारवादी, उदारवादी और नरमपंथी तथा गैर राजनीतिक सन्यासी षामिल थी। वास्तव में वे उन सभी से जुड़ी थीं, जो भारत का कल्याण चाहते थे। निवेदिता पर पुलिस द्वारा निगरानी रखी जाती थी। उनकी अरविन्दों के साथ–मित्रता सबसे खतरनाक मानी जाती थी, क्योंकि उनका उद्देष्य स्पश्ट रूप से क्रान्तिकारी था। निवेदिता की पुस्तक काली दी मदर से वे काफी प्रभावित थे। 1905 में निवेदिता ने एक राश्ट्रीय झण्डे का निर्माण किया जो गहरे लाल और पीले रंग से गढ़ा हुआ था और 1906 के कांग्रेस द्वारा आयोजित प्रदर्षनी में इसे प्रस्तुत किया गया। झण्डे के बीच – प्रतीक था, जिसका तात्पर्य था निःस्वार्थ व्यक्ति। कई लोगों ने इस प्रतीक को स्वीकार किया, लेकिन बाद में जो प्रतीक स्वीकृत हुआ, वह गॉधी जी का चरखा था। अर्थषास्त्री विनाय सरकार मानते थे कि वे विलक्षण, राश्ट्रवाद और जुझारू भारतीयता की दार्षनिक थी।

20 जुलाई, 1905 को कर्जन ने बंगाल विभाजन की घोशणा की। यह संगठित बंगाल के लिये बहुत बड़ा आघात था। निवेदिता ने बंगाल के विभाजन को काली छाया बताया। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने विरोधों और याचिकाओं का नेतृत्व किया, जिसे निवेदिता ने पूरा समर्थन दिया। जनता को स्वदेषी आन्दोलन के रूप में एक नया षस्त्र मिल गया। इसने गरीबों और निरक्षर वर्ग को राश्ट्रीय गौरव प्रदर्षित करने का मौका दिया। उन्होनें दी इण्डियन रिव्यू में लिखा कि स्वदेषी आन्दोलन द्वारा सहायता और पुरूशत्व की आवाज उठी।

1905 का कांग्रेस अधिवेषन बनारास में आयोजित हुआ जिसमें गोखले के आमंत्रण पर निवेदिता षामिल हुई। इस अधिवेषन में बंगाल के सदस्य उदार और अनुदारवादी में विभाजित हो गये। निवेदिता ने अनुदारवादियों का समर्थन किया और जो स्वदेषी आन्दोलन से लाभ प्राप्त करने का निर्णय कर चुके थे। इनका नेतृत्व विपिनचन्द्र पाल ने किया। निवेदिता गोखले के उदारवादी विचारों से असहमत थी। अनुदारवादियों का प्रस्ताव एक मत से स्वीकार कर लिया गया। निवेदिता कांग्रेस के इस अधिवेषन के विशय में लिखती है कि कांग्रेस में पहली बार दर्षक के रूप में आने वाले लोगों को जो एक चीज आकर्शित करती है, उदाहरण के लिये एक दर्षक जो तथ्यों से हर सम्भव न्याय करने और पूर्व मान्यताओं की उपेक्षा कर एक दृढ़ निष्चय के साथ जाता है वह है धुर दक्षिण पंथी से लेकर बामपंथी तक सभी सदस्यों की विलक्षण सहमीत भाव। अगले वर्श कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेषन में भी वे षामिल हुई। अनुदारवादियों, विपिन चन्द्र पल व अरविन्दों ने एक नई पार्टी का निर्माण कर लिया था। इसके बाद वे कांग्रेस के किसी भी अधिवेषन में षामिल नहीं हुई।

बनारस–अधिवेषन के समय निवेदिता की मुलाकात श्रीमती एनी बेसेंट से हुई। एनी बेसेन्ट के साथ उनके हार्दिक सम्बन्ध थे। निवेदिता उनके भारतीयों के समर्थन उनके संघर्शो को हृदय से स्वीकार करती थी परन्तु वे थियोसोफी

से अलग रहीं। श्रीमती बेसेन्ट यूरोपियन ही रहीं। वे भारतीयों का समर्थन करती थी लेकिन बहुत अधिक बाहर से ही जब कि निवेदिता स्वयं को हिन्दू मानती थी। वे भारत के प्रति पूर्णतया समर्पित थीं और धर्म के सम्बन्ध में उनका ज्ञान विषेश था।

1906 के अन्तिम महीनों में पूर्वी बंगाल का बारीसाल जिला प्रसिद्व हो गया। वहॉ भीशण अकाल पड़ा था। निवेदिता को अपने जीवन का सर्वाधिक महान अनुभव हुआ। उन्होनें पीड़ा और सुन्दरता को एक साथ देखा। भीशण अकाल के बावजूद सरकार ने अकाल सहायता पर रोक लगा दी। कलकत्ता की जनता ने अकाल पीड़ितों का सहयोग करने का निर्णय किया। वारीसाल के मीर्टीभंगा गॉव ने निवेदिता ने अकाल का भीशण प्रकोप देखा। जहॉ लोगों के पास न खाने के लिए अनाज था। न घर न वस्त्र, गॉव बाढ़ में बह चुके थे। निवेदिता ने अकाल पीड़ितों की काफी सहायता की। अकाल के दृश्यों ने निवेदिता को काफी प्रभावित किया। उन्होनें यह माना कि संसार में दो प्रकार की मानवता है, देष की अषिक्षित जनता और षहरी निवासी। इनके बीच एक गहरी खाई है, लेकिन भारत में विदेषी षासन की उपस्थिति ने आधुनिक युग के इस बुरे लक्षणों को और अधिक बढ़ा दिया है। विद्यार्थियों ने अष्विनी कुमार दत्त के निरीक्षण में अकाल राहत का संगठन किया और राश्ट्रवाद की भावना को महसूस करना षुरू किया। निवेदिता जानती थी कि भारत को दो चीजें आवष्यक रूप से प्राप्त करनी चाहिए पहली राश्ट्रीय पहचान और ब्रिटिष षासन का अन्त और दूसरी, षिक्षित और आदर्षवादी युवाओं में आषा।

इसी समय निवेदिता ने `विवेकानन्द दी मास्टर ऐज आई सा हिम' नामक और 'क्रेडल टेल्स ऑफ हिन्दुज' नामक पुस्तक लिखना आरम्भ किया। उन्होनें डॉ0 बोस की पुस्तक 'कम्परेटिव सेण्ट्रों फिजियालाजी' लिखने में भी सहायता पहुॅचायी। इधर अंग्रेजी सरकार ने क्रान्तिकारी गतिविधियों को कुचलना षुरू कर दिया था। बिना मुकदमें के भारतीय नेताओं की गिरफ्तारी और सजाओं ने निवेदिता को काफी निराष किया। लाजपत राय के देष निश्कासन पर उन्होनें लिखा कि क्या सरकार पागल हो चुकी है? जब विवेकानन्द के भाई भूपेन्द्र नाथ दत्त को राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया तो निवेदिता ने उनकी जमानत कराई। बाद में जब इन्हें एक साल की सजा हो गई, उन्होनें उनकी मॉ भुवनेष्वरी देवी को सांत्वना दी। डॉ0 जगदीष बोस और उनकी पत्नी अबाला बोस भारत में उनके अभिन्न मित्र थे। डॉ0 बोस की कई किताबों पर उन्होनें उनके साथ काम किया। पत्रिकाओं और समाचार–पत्रों के लिये उनका योगदान असीमित था। उनकी कई पुस्तकें जैसे फुट फाल्स ऑफ इण्डियन हिस्ट्री को आज पूर्णतयाः स्वीकार किया जाता है। कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर उनके समर्पित मित्र थे। 1907 में से स्वास्थ्य लाभ के लिये लन्दन चली गई। वे पॉच वर्शो बाद अपने जन्मस्थान पर आई की लेकिन वहॉ पहुॅचते ही उन्हें फिर से भारत की याद सताने लगी।

निवेदिता केवल भारतीय राजनीति की आदर्षो और रणनीतियों से ही नहीं जुड़ी थी, उन्होनें भारतीय कला के पुनरूत्थान से भी स्वयं को जोड़ा जिसे वे राश्ट्र के पुनर्जागरण का आवष्यक अंग मानती थी इन सभी विशयों पर निवेदिता एक क्रान्तिकारी थी। वे विज्ञान की भांति कला को भी भारतीय राश्ट्रवाद की अभिव्यक्ति मानती थी। स्वयं उनके षब्दों में कला, विज्ञान, षिक्षा और स्वयं उद्योग के समान, इसका उपयोग अब मातृभूमि के पुर्ननिर्माण के लिये किया जाना चाहिए और किसी अन्य उद्देष्य के लिए नहीं। इधर भारत से आने वाले समाचार निराषाजनक थे। हिंसा बढ़ रही थी। मुजफ्फरपुर बम काण्ड, बंगाल के गर्वनर जनरल की हत्या का प्रयास, अरविन्दों की गिरफ्तारी अष्विनी कुमार दत्त का

देष निश्कासन आदि निराषाजनक समाचार थे। निवेदिता इस समय योजनाबद्ध क्रान्ति की आवष्यकता महसूस करती थी। इस बार निवेदिता दो वर्शो तक विदेष में रही। 1909 में कैंसर से इनकी माता की मृत्यु हो गयी वे 16 जुलाई 1909 को भारत वापस आ गई। हमेषा की तरह भारत आने पर इस बार भी वे बेलूर मठ गई, दक्षिणेष्वर में भी रामकृश्ण के कमरे में पूजा की। राजनीतिक स्थिति काफी निराषाजनक थीं। क्रान्तिकारियों को जो बम फेंकने या हत्या के आरोप में गिरफ्तार किये गये थे को या तो फांसी दे दी गई थी या आजीवन कारावास। घरों का निरीक्षण और गिरफ्तारियॉ जारी थी। इस सबने लोगों को मजबूत राश्ट्रवादी भावना में पिरो दिया था, स्वदेषी अब तक काफी प्रचलित हो चुका था। इस स्थिति में निवेदिता ने राश्ट्रवादी नेताओं से मुलाकात जारी रखी।

इसी समय मार्ले मिंटो सुधार योजना लागू हुई। अनुदार व उदारवादियों ने कांग्रेस में एकता लाने के प्रयास किये लेकिन यह सम्भव नहीं हो सका। अरविन्दो ने कोई समझौता नहीं का नारा दिया और यह स्पश्ट कर दिया कि नियंत्रण के बिना कोई सहयोग नहीं हो सकता है। सरकार के उनके निश्कासन के आदेष जारी कर दिये। निवेदिता ने उन्हें छिपकर भारत के बाहर कार्य करने का सलाह दिया। अपने निश्कासन के कारण अरविन्दों ने अपनी पत्रिका कर्म योगिन के सम्पादन का दायित्व निवेदिता को सौंपा। अपने सम्पादन काल के तीन महीनों में इन्होनें कर्म योगिन का पूरा स्वरूप परिवर्तित कर दिया। उन्होनें राश्ट्रवाद की भावना को जारी रखा लेकिन इसका सामान्य स्वरूप राजनीतिक कम और विवेकानन्द के सिद्वान्तों की अधिक अभिव्यक्ति देता था।

निवेदिता जब भी आराम की आवष्यकता महसूस करती थीं, वे कुछ अलग कार्य करने लगती थी या फिर तीर्थ यात्रा पर जाना पसन्द करती थी। मई 1910 में वे हिमालय, केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा पर गई। उनके साथ डॉ0 बोस का परिवार था। केदारनाथ में भगवान षिव के दर्षन से व काफी अभिभूत हुई। बद्री नारायण पहुॅचने पर पुजारी ने उन्हें दर्षन की अनुमति नहीं दी, लेकिन वे निराष नहीं हुई क्योंकि विवेकानन्द ने उन्हें षिक्षा दी थी कि अति संकीर्ण विचारधारा के रूढ़िवादियों के प्रति भी हमें आदर प्रदर्षित करना चाहिए। वापस कलकत्ता आने पर उन्होनें अपनी तीर्थ यात्रा पर आधारित एक पिलग्रिम्स डायरी का प्रकाषन करवाया।

निवेदिता कार्य की अधिकता से काफी थक चुकी थीं। 28 अक्टूबर, 1911 को उनका चौवालीसवॉ जन्मदिन था। भारत में उनकी सक्रिय राजनीतिक कार्यो जो 1902 में विवेकानन्द की मृत्यु के बाद षुरू हुये थे को नौ वर्श हो चुके थे। कलकत्ता में उनका निवास स्थान बोसपारा लेन अब निवेदिता लेन के नाम से जाना जाता है। जहॉ एक छोटा सा घर था वहॉ अब निवेदिता गर्ल्स स्कूल है। 1911 में वे डॉ0 बोस के परिवार के साथ गर्मियों की छुट्टियॉ बिताने दार्जिलिंग चली गई। उन्होनें दार्जिलिंग में कुछ दिन आराम से व्यतीत किये निवेदिता वहॉ गम्भीर रूप से बीमार हो गई। उन्हें आभास हो गया कि उनकी मृत्यु अब निकट है। उन्होनें अपनी वसीयत में सभी कुछ मातृभूमि को समर्पित कर दिया। उनकी आखिरी इच्छा थीं कि उनकी मृत्यु सूर्योदय के समय हो। 13 अक्टूबर की सुबह जैसे ही सूर्योदय हुआ उन्होनें आकाष पर सुबह की पहली रेखा देखी उनकी मृत्यु हो गई।

दार्जिलिंग में उनके स्मारक पर लिखा हुआ है यहॉ सिस्टर निवेदिता की राख रखी हुई है जिन्होनें अपना सब कुछ भारत को दे दिया। निवेदिता ने बंगाल का विभाजन राश्ट्वादी गतिविधियों का दमन आदि देखा लेकिन वे ब्रिटेन द्वारा प्रदत्त नाइटहुड की उपाधि नहीं देख सकीं, न ही उनके मित्रा डा. बोस का रिसर्च इंस्टीट्यूट

बन सका, न ही वे अपनी आत्मकथा लिख सकी ये रामकृश्ण मिषन का वर्तमान स्वरूप भी नहीं देख पाई जो कि आज भारत में सबसे बड़ा मठ है जहॉ अब महिलाओं के लिए अलग से संस्था है। निवेदिता का प्रभाव उन सभी चीजों में देखा जा सकता है जिसे उन्होनें उस समय कहा किया और लिखा। वे एक समर्पित राश्ट्रवादी सेनानी थीं जिनके लिये भारत की स्वतंत्रता सभी मायनों में सबसे जरूरी थी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. मनमोहन कौरः रोल ऑफ वुमेन इन दी फ्रीडम मूवमेन्ट (1857–1947), (दिल्ली 1968) पृ0 244
2. अन्तेकर, ए0एस0, दी पोजीषन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइजेषन, बनारस, 1936
3. देसाई, नीरा वुमेन इन मॉडर्न इण्डिया बम्बई 1957
4. देहली, पब्लिकेषंस डिवीजन ऑफ इण्डिया वुमेन इन इण्डिया दिल्ली 1958
5. गेज ई0एम0सी0 एण्ड चौकसी वुमेन इन मॉडर्न इण्डिया बम्बई 1929
6. कौर मनमोहन रोल ऑफ वुमेन इन दी फ्रीडम मूवमेंट (1857'1947) दिल्ली 1968
7. सेनगुप्ता, पद्मिनी पायनियर वुमेन ऑफ इण्डिया नई दिल्ली 194
8. नीरा देसाईः वुमेन इन माडर्न इण्डिया बम्बई 1957, पेज नं0–107